# महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं- डॉ. गदिया

## मेवाड़ विश्वविद्यालय में मनाई गई महाराणा प्रताप एवं रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

चमकता राजस्थान

गंगरार (अमित कुमार चेचानी)। मेवाड़ विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप और रविन्द्र नाथ टैगोर की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। उक्त अवसर पर मेवाड़ विष्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने महाराणा प्रताप को याद करते हुऐ कहा कि प्रताप, महाराणा तब बने जब उन्होने सर्वहारा समाज को एकजुट करके मेवाड़ आन के लिये त्याग की पराकाष्ठा को पार किया। डॉ. गदिया ने महाराणा प्रताप एवं उनके साथियों की वीरता के बारे में विस्तार से वर्णन करते हुए झाला मन्ना, हकीम खां सूरि, राणा पूंजा, रामदास राठौड़, भीम सिंह, राम सिंह तंवर आदि के बलिदान जिक्र किया। उन्होने कहा

कि वैसे तो महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाएं पूरे देश में प्रसिद्ध है लेकिन उन शौर्यगाथाओं के साथ महाराणा प्रताप की नेतृत्व क्षमता और कार्यपालक की दास्तान भी हम सभी को पढ़नी चाहिए। महाराणा प्रताप देश की आन–बान–शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं। डॉ. गदिया ने आगे कहा कि महाराणा प्रताप चाहते तो अकबर से हाथ मिलाकर भोग विलासिता पूर्ण राजसी जीवन जी सकते थे लेकिन उन्होने अपने पूर्वजों के स्वाभिमान का मान रखते हुए जंगलों में भटकर भी देष की आन को सर्वोच्च महत्व दिया और आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा दी। रवीन्द्र नाथ टैगोर को याद करते हुए उन्होने कहा कि हमारे राष्ट्रगान के रचयिता एक महान साहित्यकार और समाज सुधारक थे। उन्होने कहा कि टैगोर को उनकी प्रसिद्ध काव्य संग्रह गीतांजली के लिये नोबेल पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. एस. राणा, प्रतिकुलपति प्रो. सर्वोम दीक्षित, प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल, सहसचिव लक्ष्मण सिंह रावत, उप कुलसचिव दीप्ती शास्त्री, डीन एकेडमिक्स डी.के. शर्मा, निदेशक हरिश गुरनानी सहित विश्वविद्यालय शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं- डॉ. गदिया

## मेवाड़ विश्वविद्यालय में मनाई गई महाराणा प्रताप एवं रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

**जयपुर मिड-डे टाईम्स**

गंगरार । मेवाड़ विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप और रविन्द्र नाथ टैगोर की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। उक्त अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने महाराणा प्रताप को याद करते हुऐ कहा कि प्रताप, महाराणा तब बने जब उन्होने सर्वहारा समाज को एकजुट करके मेवाड़ आन के लिये त्याग की पराकाष्ठा को पार किया। डॉ. गदिया ने महाराणा प्रताप एवं उनके साथियों की वीरता के बारे में विस्तार से वर्णन करते हुए झाला मन्ना, हकीम खां सूरि, राणा पूंजा, रामदास राठौड़, भीम सिंह, राम सिंह तंवर आदि के बलिदान जिक्र किया। उन्होने कहा कि वैसे तो महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाएं पूरे देश में प्रसिद्ध है लेकिन उन शौर्यगाथाओं के साथ महाराणा प्रताप की नेतृत्व क्षमता और कार्यपालक की दास्तान भी हम सभी को पढ़नी चाहिए। महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं। डॉ. गदिया ने आगे कहा कि महाराणा प्रताप चाहते तो अकबर से हाथ मिलाकर भोग विलासिता पूर्ण राजसी जीवन जी सकते थे लेकिन उन्होने अपने पूर्वजों के स्वाभिमान का

मान रखते हुए जंगलों में भटकर भी देष की आन को सर्वोच्च महत्व दिया और आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा दी।

रवीन्द्र नाथ टैगोर को याद करते हुए उन्होने कहा कि हमारे राष्ट्रगान के रचयिता एक महान साहित्यकार और समाज सुधारक थे। उन्होने कहा कि टैगोर को उनकी प्रसिद्ध काव्य संग्रह गीतांजली के लिये नोबेल पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. एस. राणा, प्रतिकुलपति प्रो. सर्वोम दीक्षित, प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल, सहसचिव लक्ष्मण सिंह रावत, उप कुलसचिव दीप्ती शास्त्री, डीन एकेडमिक्स डी.के. शर्मा, निदेशक हरिश गुरनानी सहित विश्वविद्यालय शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे ।

# महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं- डॉ. गदिया

## मेवाड़ विश्वविद्यालय में मनाई गई महाराणा प्रताप एवं रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

* राजस्थान दर्शन |

**गंगरार।** मेवाड़ विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप और रविन्द्र नाथ टैगोर की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। उक्त अवसर पर मेवाड़ विष्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने महाराणा प्रताप को याद करते हुऐ कहा कि प्रताप, महाराणा तब बने जब उन्होने सर्वहारा समाज को एकजुट करके मेवाड़ आन के लिये त्याग की पराकाष्ठा को पार किया। डॉ. गदिया ने महाराणा प्रताप एवं उनके साथियों की वीरता के बारे में विस्तार से वर्णन करते हुए झाला मन्ना, हकीम खां सूरि, राणा पूंजा, रामदास राठौड़, भीम सिंह, राम सिंह तंवर आदि के बलिदान जिक्र किया। उन्होने कहा कि वैसे तो महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाएं पूरे देश में प्रसिद्ध है लेकिन उन शौर्यगाथाओं के साथ महाराणा प्रताप की नेतृत्व क्षमता और कार्यपालक की दास्तान भी हम सभी को पढ़नी चाहिए। महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं। डॉ. गदिया ने आगे कहा कि महाराणा प्रताप चाहते तो अकबर से हाथ मिलाकर भोग विलासिता पूर्ण राजसी जीवन जी सकते थे लेकिन उन्होने अपने पूर्वजों के स्वाभिमान का मान रखते हुए जंगलों में भटकर भी देष की आन को सर्वोच्च महत्व दिया और आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा दी। रवीन्द्र नाथ टैगोर को याद करते हुए उन्होने कहा कि हमारे राष्ट्रगान के रचयिता एक महान साहित्यकार और समाज सुधारक थे। उन्होने कहा कि टैगोर को उनकी प्रसिद्ध काव्य संग्रह गीतांजली के लिये नोबेल पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. एस. राणा, प्रतिकुलपति प्रो. सर्वोम दीक्षित, प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल, सहसचिव लक्ष्मण सिंह रावत, उप कुलसचिव दीप्ती शास्त्री, डीन एकेडमिक्स डी.के. शर्मा, निदेशक हरिश गुरनानी सहित विश्वविद्यालय शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं- डॉ. गदिया

## मेवाड़ विश्वविद्यालय में मनाई गई महाराणा प्रताप एवं रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

न्यूज ज्योति

**गंगरार।** मेवाड़ विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप और रविन्द्र नाथ टैगोर की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। उक्त अवसर पर मेवाड़ विष्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने महाराणा प्रताप को याद करते हुऐ कहा कि प्रताप, महाराणा तब बने जब उन्होने सर्वहारा समाज को एकजुट करके मेवाड़ आन के लिये त्याग की पराकाष्ठा को पार किया। डॉ. गदिया ने महाराणा प्रताप एवं उनके साथियों की वीरता के बारे में विस्तार से वर्णन करते हुए झाला मन्ना, हकीम खां सूरि, राणा पूंजा, रामदास राठौड़, भीम सिंह, राम सिंह तंवर आदि के बलिदान जिक्र किया। उन्होने कहा कि वैसे तो महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाएं पूरे देश में प्रसिद्ध है लेकिन उन शौर्यगाथाओं के साथ महाराणा प्रताप की नेतृत्व क्षमता और कार्यपालक की दास्तान भी हम सभी को पढ़नी चाहिए। महाराणा प्रताप देश की आन-बान-शान, बलिदान एवं स्वाभिमान का प्रतीक हैं। डॉ. गदिया ने आगे कहा कि महाराणा प्रताप चाहते तो अकबर से हाथ मिलाकर भोग विलासिता पूर्ण राजसी जीवन जी सकते थे लेकिन उन्होने अपने पूर्वजों के स्वाभिमान का मान रखते हुए जंगलों में भटकर भी देष की आन को सर्वोच्च महत्व दिया और आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा दी।